अनुबंध

ऐ खुदा, चल आज ये अनुबंध करते हैं,
छोड़ देता हूँ मैं हठ अपनी, नासतिक होने की,
जो छोड़े तू लत अपनी
इंसान को इंसान से लड़ाने की !

मांग हैं मेरी बहुत साधारण,
और वो भी तेरे ही पक्षपात की !

ज्ञान दे कुछ अपने नामुन्दाओं को,
ये पंडित, पादरी और मौलवियों को !
जो भाषण दें प्रेम का,
लेकिन सिर्फ हिंसा भड़काते हैं !
पानी की तरह इन्सान का,
ये खून बहाते हैं !

बुला बैठक अपने सामंतो की,
और रख प्रस्ताव मेरा !
खुद बैठें हैं जो स्वर्ग में,
इस धरती को नरक बनाये जाते हैं !

हिंसा का ये खेल अब बंद होना चाहिए,
तुम सभी को भी अब,
अछा आचरण दिखाना चाहिए !
जो मंज़ूर नहीं प्रस्ताव मेरा,
तो जा ढूँढ ले कोई नया भक्त अपना !
मैं भी इंतज़ार करता हूँ,
एक सहिर्द्य और धार्मिक खुदा की !

- राजीव नंदा